Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XIX, July-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

भारतीय साहित्य का स्वरूप : एक परिचय

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XIX,July-2015, ISSN 2230-7540

भारतीय साहित्य का स्वरूप : एक परिचय

Manjusa Rani

Hindi Lecturer, Shri Durga Mahila College, Tohana (Haryana)

----------X----------

भारतीय साहित्य को ठीक तरह से समझने के लिए इसकी एकता और अखंडता को ठीक तरह से समझना जरूरी है। भारत अनके भाषाओं वाला विशाल देश है। उत्तर पश्चिम में पंजाबी, हिन्दी और उर्दू, मध्य पश्चिम में, मराठी और गुजराती दक्षिण में तमिल, तेलुगू कन्नड़ और मलयालम के अलावा कश्मीरी, कोंकणी, सिंधी, डोंगरी इत्यादि भी पर्याप्त प्राचीनता रखती हैं।

''यदि आधुनिक भारतीय भाषाओं के समग्र वांग्मय का संचयन किया जाए, तो किसी भी दृष्टि से यूरोपीय साहित्य से कम नहीं होगा। वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत पालि प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य का समावेश करने पर इसका अनंत विस्तार कल्पना की सीमा को पार कर जाता है।''1

भारतीय साहित्य एकता और विविधता के आधार पर विभिन्न भारतीय भाषाओं में रचित वह दीर्घकालीन साहित्य राशि है – जिसमें भारतीय रिक्थ से प्राप्त एकता है – एवं क्षेत्रीय प्रभाव द्वारा प्रकाशित उनकी निजता–विविधता के रूप व्यक्त हुई है।

''भारतीय साहित्य भारतीय जन गण की तरह विविधता और एकता के परस्पर सूत्रों में बुनी हुई एक सघन इकाई है। विभिन्न धाराओं व्यक्तित्वों और विचार सरणियों के लोक तांत्रिक अनुगुंफन से ही वह वजूद में आती है।''2

भारत वर्ष अनेक भाषाओं वाला एक विशाल देश है। भारतीय संविधान में शामिल हर भाषा की विपुल साहित्य राशि भारतीय साहित्य के नाम से जानी जाती है।

इस विपुल साहित्य राशि में प्रत्येक भाषा के साहित्य का अपना प्रखर वैशिष्ट्य है। हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, सिंधी की सीमाएं कितनी भी मिली हुई क्यों ना हों–उनके विशेषताएं अलग और सुरक्षित हैं। बंगला, ओड़िया, असमिया में बहुत सी समानताए हैं, लेकिन उनके लोक, समाज एवं क्षेत्रीय विविधता ने उनमें बहुत सी विभिन्नता भी कर दी हैं। तेलुगू, मलयालम और कन्नड़ का उत्स एक होने पर भी उनमें पर्याप्त अंतर भी है।

साहित्य का यह अंतर दरअसल संस्कृतियों एवं रीति–रिवाज, खानपान, लोकाचार के बाद भी हमारी भारतीयता का मूल एक ही है और असंदिग्ध भी है। उसी तरह भारतीय भाषाओं की एकता अपूर्व है। उनकी विविधता मौलिक और रमणीय है।

भारतीय साहित्य की समानता के बिन्दु अधोलिखित हैं:

1. दक्षिण में तमिल और उत्तर में उर्दू को छोड़कर लगभग सभी भारतीय भाषाओं का उद्भव एक ही समय में हुआ है।

2. सभी भारतीय भाषाओं के विकास के चरण भी लगभग समान ही है। प्रायः सभी का आदिकाल 15वीं सदी तक चलता है। मुगल वैभव के अंत तक मध्य काल है। इसी तरह सभी भारतीय भाषाओं के विकास के चरण लगभग चार कालों में विभक्त है।

3. स्पष्ट है कि भारत का राजनीतिक और सामाजिक माहौल हर धर्म और जाति को समान रूप से प्रभावित कर रहा था। मुगलों के साम्राज्य का विस्तार एवं उनका भारतीय विरोध हर सूबे और भारत के हर हिस्से में एक समान रहा। धार्मिक आंदोलन भी एक से ही रहे। राम कृष्ण की सगुण भक्ति एवं योग और साधुओं की निर्गुणाक्ति भी एक समान ही साहित्य को प्रभावित कर रही थी, भले ही अभिव्यक्ति का माध्यम कोई भी भाषा क्यों न हो। इसी तरह मुगलों के बढ़ते प्रभाव एवं इरानी संस्कृति के प्रचार से एक नागर सत्ता का विकास भी भारत में हो रहा था। लेकिन इस संस्कृति का विकास ज्यादा समय नहीं चला और यह अपना प्रभाव खोने लगी। यहां विलासिता का बोलबाला हो गया और हर भाषा में यह काल रीति काल का है।

4. भारतीय भाषाओं के साहित्य का यदि साहित्यिक पृष्ठभूमि पर विचार किया जाए, तो वह एक ही है। रामायण, महाभारत, पुराण, भागवत, संस्कृत का अभिजात साहित्य हर भारतीय भाषा की समान रूप से धरोहर है। कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट, पाणिनी, श्री हर्ष, अमरूक, जयदेव आदि की अमर कृतियां, बौद्ध और जैन साहित्य ने सभी भारतीय भाषाओं को अपने पूर्व आधार के रूप में ग्रहण किया।

सभी भारतीय भाषाओं के लिए उपर्युक्त ग्रंथ अक्षय प्रेरणा स्रोत है। इनके विचारों का प्रयोग सभी ने आधार के लिए किया है। यही कारण है कि भारतीय साहित्य में मूल रूप में समानता आ गई है। समान आधार सामग्री को लेकर रचा गया भारतीय

www.ignited.in

साहित्य काफी दूर तक समानता भी रखता है, लेकिन क्षेत्रीय विशेषताओं ने उन्हें वैविध्यपूर्ण बनाया है।

भारतीय साहित्य की समान प्रवृत्तियां अधोलिखित हैं:

1. नाथ साहित्य,
2. चारण काव्य,
3. संत काव्य,
4. प्रेम आख्यानक काव्य,
5. सगुण भक्तिकाव्य (अ) भक्ति काव्य (ब) चरित काव्य।
6. अभिनेय साहित्य।

आधुनिक काव्य – 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से आरंभ होकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक का कालखण्ड है। इस काल में राजनैतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक चेतना के उदय का भी यही समय है। सभी भारतीय भाषाओं विकास – रेखा का लगभग यही क्रम रहा है।

उपर्युक्त विवचे न भारतीय साहित्य की वस्तुपरक एकता स्पष्ट करने का उपक्रम है। भारतीय साहित्य में शिल्पगत एकता भी रेखांकित करने योग्य है।

शिल्पगत एक्य को जाहिर करने के लिए हमें संस्कृत साहित्य पर विचार करना होगा। लगभग सभी भारतीय भाषाओं संस्कृत, खण्ड काव्य, महाकाव्य, मुक्तक, कथा और आख्यायिका के अतिरिक्त अपभ्रंश से चरित काव्य प्रेमगाथा शैली, रास पद शैली आदि को अपनाया। देशी छदं, दोहा, चौपाई, छंद भारतीय वांगमय के लोकप्रिय छंद है।

आधुनिक युग में पश्चिमी प्रभाव की सामग्री भारतीय साहित्य को दिशा देने में अहम भूमिका निभा रहा है। इससे प्रगीत काव्य, चतुष्पदी, शोकगीत, संबोधन गीत, गद्यगीत आदि की लोकप्रियता भारतीय साहित्य में बढ़ी है। छायावादी विशेषताएं, चित्रात्मकता, लाक्षणिकता, गेयता, प्रतीकात्मकता आदि सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में स्थान बना चुके हैं।

प्रसंगवश यह भी कहना जरूरी है कि अंग्रेजी ने भारतीय भाषाओं एवं साहित्य को समान रूप से प्रभावित किया है। इस धारण लगभग हर भारतीय भाषा एक रूप सी हुई जा रही है। हिन्दी में हिंगलिश, तमिल में तमलिश आदि की मिलावट अधुनातन प्रवृत्ति है।

उपर्युक्त विवेचन के साथ ही खेद सहित यह भी कहना पड़ता है कि भारत वर्ष का राजनीतिक ढांचा विविधता की ओर दृष्टि रखता है और अनेक रूपता अलगाव को प्रकाशित करता है। जबकि भारत वर्ष की एकता इस बात में निहित है– यदि तथ्य मिलता जुलता है, तो अभिव्यक्ति के माध्यम की विविधता अध्ययन का बिन्दु होना चाहिए न कि विभाजन का।

जैसे संत काव्य के अध्येता को संत कबीर के साथ ही नामदेव रज्जब, तमिल के 'अठ्ठारह सिद्धर' संत कवि, तेलुगू में वेमन, वीर ब्रम्हन कन्नड़ के सर्वज्ञ आदि को भी अध्ययन आवश्यक रूप से शामिल होना चाहिए। मघुराभक्ति के अध्येता को ओड़िया, बांग्ला, असमी, तेलगू और कन्नड़ की मघुरा भक्ति साहित्य को जानकर अध्ययन पूर्ण करना चाहिए वरना एक ही भाषा का अध्ययन अधूरा और एकांगी है।

निष्कर्ष यह है कि भारतीय साहित्य अभिव्यक्ति में भिन्नता रखते हुए भी, भाषागत विविधता के बावजदू अखण्ड भावात्मक एकता और शिल्पगत एकरूपता रखता है।

भारतीय को समग्रता में ग्रहण करने पर ''इस अंतः साहित्यिक शोध प्रणाली के द्वारा अनेक लुप्त कड़ियां अनायास ही मिल जाएंगी, अगणित जिज्ञासाओं का सहज ही अंत हो जाएगा। साथ ही भारतीय चिंताधारा एवं रागात्मक चेतना की एकता का उद्घाटन हो सकेगा।''3

संदर्भ

1. भारतीय साहित्य, डॉ. नगेन्द्र, भूमिका, पृ. 11
2. भारतीय साहित्य स्थापनाएं एवं प्रस्तावनाएं, के. सचिदानंदन, फ्लैप से।
3. भारतीय साहित्य, डॉ. नगेन्द्र, भूमिका, पृ. XXXII.